[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 1578 **L**

Unique Paper Code : 2052101202

Name of the Paper : Hindi Sahitya Ka Itihaas (Aadhunik Kaal)

Name of the Course : **B.A. Hons. (Hindi)**

Semester : II

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।

1. नवजागरण के संदर्भ में भारतेन्दु मंडल की भूमिका पर विचार कीजिए।

अथवा

राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन के संदर्भ में द्विवेदी युगीन चेतना पर प्रकाश डालिए। (18)

2. हिन्दी नाटक की विकास - यात्रा का विवेचन कीजिए।

P.T.O.

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

अथवा

हिन्दी आलोचना की विकास यात्रा का परिचय दीजिए। (18)

3. 'प्रगतिवादी काव्य आम जन की पीड़ा की अभिव्यक्ति करता है' - इस कथन के संदर्भ में प्रगतिवादी काव्य के परिवेश और प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए।

अथवा

उत्तर छायावाद काव्य की विशेषताएं लिखिए। (18)

4. समकालीन कहानी की मुख्य विशेषताओं की विवेचना कीजिए।

अथवा

हिन्दी के अस्मितामूलक विमर्श के महत्व का निरूपण कीजिए। (18)

5. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर टिप्पणी लिखिए : (9+9=18)

(क) मध्यकालीन बोध

(ख) यात्रा आख्यान

(ग) प्रयोगवाद

(घ) साठोत्तरी कविता

(ङ) साहित्यिक पत्रकारिता

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

Your Roll No...............

Sr. No. of Question Paper : 1606 L

Unique Paper Code : 2052101203

Name of the Paper : Hindi Nibandh Evam Anya Gadya Vidhaein

Name of the Course : B.A. (Hons.) Hindi

Semester : II/DSC

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (10×2=20)

(क) यह बात स्थिर और निर्विवाद है कि श्रद्धा का विषय किसी-न-किसी रूप में सात्विक शील ही होता है। अतः करुणा और सात्विकता का संबंध इस बात से और भी सिद्ध होता है कि किसी पुरुष को दूसरे पर करुणा करते देख तीसरे को करुणा करने वाले पर श्रद्धा उत्पन्न होती है। किसी को क्रोध, भय, ईर्ष्या, घृणा, आनंद आदि करते देख लोग उस पर श्रद्धा नहीं कर बैठते। क्रिया में तत्पर करने वाली प्राणियों की आदि

P.T.O.

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

अंत:करण वृत्ति मन या मनोवेग है। अतः इन मनोवेगों में से जो श्रद्धा का विषय हो वही सात्विकता का आदि संस्थापक ठहरा। दूसरी बात यह भी ध्यान देने की है कि मनुष्य के आचरण के प्रवर्तक भाव या मनोविकार ही होते हैं, बुद्धि नहीं। बुद्धि दो वस्तुओं के रूपों को अलग-अलग दिखला देगी, यह मनुष्य के मन के वेग या प्रवृत्ति पर है कि वह उनमें से किसी एक को चुनकर कार्य में प्रवृत्त हो।

अथवा

मौन रूपी व्याख्यान की महत्ता इतनी बलवती इतनी अर्थवती और इतनी प्रभाववती होती है कि उसके सामने क्या मातृभाषा, क्या साहित्य-भाषा और क्या अन्य देश की भाषा सब की सब तुच्छ प्रतीत होती हैं। अन्य कोई भाषा दिव्य नहीं, केवल आचरण की मौन भाषा ही ईश्वरीय है। विचार कर के देखो, मौन व्याख्यान किस तरह आपके हृदय की नाड़ी-नाड़ी में सुंदरता को पिरो देता है! वह व्याख्यान ही क्या, जिससे हृदय की धुन को - मन के लक्ष्य को - ही न बदल दिया। चंद्रमा की मंद - मंद हँसी का तारा गण के कटाक्ष - पूर्ण प्राकृतिक मौन व्याख्यान का - प्रभाव किसी कवि के दिल में घुसकर देखो। सूर्यास्त होने के पश्चात श्रीकेशवचंद्र सेन और महर्षि देवेंद्र नाथ ठाकुर ने सारी रात, एक क्षण की तरह, गुजार दी; यह तो कल की बात है। कमल और नरगिस में नयन देखने वाले नेत्रों से पूछो कि मौन व्याख्यान की प्रभुता कितनी दिव्य है।

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

(ख) विशेषज्ञों ने कहा, "हाँ महाराज, हमने उसकी भी योजना तैयार की है। भ्रष्टाचार मिटाने के लिए महाराज को व्यवस्था में बहुत परिवर्तन करने होंगे। एक तो भ्रष्टाचार के मौके मिटाने होंगे। जैसे ठेका है तो ठेकेदार है। ओर ठेकेदार है तो अधिकारियों को घूस है। ठेका मिट जाए तो उसकी घूस मिट जाये। इसी तरह और बहुत-सी चीजें हैं। किन कारणों से आदमी घूस लेता है, यह विचारणीय है"।

अथवा

भारतीय मनीषा ने कला, धर्म, दर्शन और साहित्य के क्षेत्र में नाना भाव से महत्वपूर्ण फल पाए हैं और भविष्य में भी महत्वपूर्ण फल पाने की योग्यता का परिचय वह दे चुकी है। परन्तु नाना कारणों से समूची जनता एक ही धरातल पर नहीं है और सब का मुख भी एक ही ओर नहीं है। जल्दी में कोई फल पा लेने की आशा से अटकलपच्चू सिद्धांत कायम कर लेना और उसके आधार पर कार्यक्रम बनाना अभीष्ट सिद्धि में सब समय सहायक नहीं होगा। विकास की नाना सीढ़ियों पर खड़ी जनता के लिए नाना प्रकार के कार्यक्रम आवश्यक होंगे। उद्देश्य की एकता ही इन विविध कार्यक्रमों में एकता ला सकती है; परंतु इतना निश्चित है कि जब तक हमारे सामने उद्देश्य स्पष्ट नहीं हो जाता तब तक कोई भी कार्य कितनी भी शुभेच्छा के साथ क्यों न आरंभ किया जाय, वह फलदायक नहीं होगा।

2. "जातियों का अनूठापन" निबंध की समीक्षा कीजिए। (15)

P.T.O.

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

अथवा

"आचरण की सभ्यता" निबंध का मूल उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।

3. 'करुणा' निबंध के आधार पर आचार्य रामचन्द्र शुक्ल की निबंध - दृष्टि पर विचार कीजिए। (15)

अथवा

"भारतवर्ष की सांस्कृतिक समस्या" निबंध में हजारी प्रसाद द्विवेदी जी ने किन समस्याओं की ओर हमारा ध्यान आकृष्ट किया है।

4. "सदाचार का ताबीज" के आधार पर भ्रष्टाचार की समस्या पर विचार कीजिए। (15)

अथवा

"निराला की साहित्य साधना - नए संघर्ष" के आधार पर निराला को साहित्य के किन-किन क्षेत्रों में संघर्ष का सामना करना पड़ा। स्पष्ट कीजिए।

5. यात्रा वृत्तांत की विशेषताओं के आधार पर "अथातो घुमक्कड़ जिज्ञासा" का विश्लेषण कीजिए। (15)

अथवा

"अज्ञेय के साथ-आचार्य जानकी वल्लभ शास्त्री" संस्मरण की समीक्षा कीजिए।

6. किसी एक पर टिप्पणी कीजिए : (10)

(क) लोकमंगल और आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के निबंध

(ख) "सदाचार का ताबीज" की भाषा शैली

(3700)

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No...............
आपका अनुक्रमांक............

L.

Sr. No. of Question Paper : 1152
Unique Paper Code : 2052102401
Name of the Paper : Bhartiya Kavyashastra
Name of the Course : B.A. (H) Hindi - DSC
Semester : IV
Duration : 3 Hours

Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. भारतीय काव्यशास्त्र की परंपरा का संक्षिप्त उल्लेख करते हुए आचार्य विश्वनाथ के योगदान को लिखिए। (15)

अथवा

भारतीय काव्यशास्त्र में अलंकार संप्रदाय का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

2. संस्कृत आचार्यों द्वारा प्रतिपादित काव्य के प्रमुख प्रयोजनों का वर्णन कीजिए। (15)

अथवा

'रमणीयार्थ प्रतिपादकः शब्दः काव्यम्' (जगन्नाथ) के आधार पर काव्य के स्वरूप का विवेचन कीजिए।

3. रस के चार प्रमुख अवयवों- स्थायी भाव, विभाव, अनुभाव और संचारी भाव का उदाहरण सहित वर्णन कीजिए। (15)

अथवा

साधारणीकरण से आप क्या समझते हैं? रस निष्पत्ति में साधारणीकरण की भूमिका की विवेचना कीजिए।

4. लक्षणा और व्यंजना शब्दशक्ति क्या है। दोनों में मुख्य अंतर उदाहरण बताइये। (15)

अथवा

अलंकार की परिभाषा देते हुए रूपक और उपमा में अंतर उदाहरण सहित लिखिए।

P.T.

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

5. निम्नलिखित में से किन्हीं तीन पर टिप्पणी लिखिए। (10×3=30)

(क) मात्रिक और वर्णिक छंद

(ख) यमक और श्लेष अलंकार में अंतर

(ग) काव्य हेतु

(घ) शांत और वात्सल्य रस

(ङ) रस का स्वरूप

(च) आचार्य वामन

Sr. No. of Question Paper : 1323 L

Unique Paper Code : 2052102402

Name of the Paper : Aadhunik Hindi Kavita (Chhayawad Tak)

Name of the Course : B.A. (Hons.) Hindi – DSC

Semester : IV

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (10×3=30)

(क) भीतर भीतर सब रस चूसै।
हँसि हँसि के तन मन मूसै।।
जाहिर बातन में अति तेज।
क्यों सखि सज्जन नहिं अंग्रेज।।

P.T.O.

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

अथवा

आनंददात्री शिक्षिका है सिद्ध कविता-कामिनी,
है जन्म से ही वह यहाँ श्रीराम की अनुगामिनी।
पर अब तुम्हारे हाथ से वह कामिनी ही रह गई,
ज्योत्सना गयी देखो, अंधेरी यामिनी ही रह गई।

(ख) कैसी मधुर मनोहर उज्ज्वल है यह प्रेम-कहानी।
जी में है अक्षर बन इसके बनूँ विश्व की बानी।
स्थिर, पवित्र, आनंद-प्रवाहित, सदा शांति सुखकर है।
अहा! प्रेम का राज्य परम सुंदर, अतिशय सुंदर है।

अथवा

कौन लेगा भार यह?
जीवित है कौन?
सांस चलती है किसकी
कहता है कौन ऊंची छाती कर, मैं हूँ -
मैं हूँ - मेवाड़ में,

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

(ग) कंकाल- जाल जग में फैले
फिर नवल रुधिर, पललव-लाली!
प्राणों की मर्मर से मुखरित
जीव की मांसल हरियाली!

अथवा

भर रही कोकिला इधर तान,
मारु बाजे पर उधर गान,
है रंग और रण का विधान,
मिलने आए हैं आदि-अंत,
वीरों का कैसा हो वसंत?

2. नए जमाने की मुकरियों का प्रतिपाद्य लिखिए। (15)

अथवा

स्वतंत्रता संग्राम के परिप्रेक्ष्य में भारत भारती की प्रासांगिकता पर प्रकाश डालिए।

3. 'पथिक' कविता में व्याप्त प्रकृति-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

जयशंकर प्रसाद की काव्यगत विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

4. 'भिक्षुक' कविता की मूल संवेदना स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

'भारत माता ग्रामवासिनी' कविता में कवि पंत ने भारत की स्थिति को कैसे दर्शाया है- वर्णन कीजिए।

5. 'वीरों का कैसा हो वसंत' कविता का भाव-पक्ष लिखिए। (15)

अथवा

महादेवी वर्मा को आधुनिक युग की मीरा क्यों कहा जाता है- विश्लेषित कीजिए।

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No...............

Sr. No. of Question Paper : 1552 **L**

Unique Paper Code : 2052102403

Name of the Paper : Hindi Upanyas

Name of the Course : **B.A. (Hons) Hindi : DSE**

Semester : IV

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

<u>छात्रों के लिए निर्देश</u>

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. हिन्दी उपन्यास के विकास में यथार्थवाद और आदर्शवाद की भूमिका स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

"उपन्यास मानव जीवन का चित्र है" - इस कथन के आलोक में उपन्यास की शिल्पगत विशेषताओं का विवेचन कीजिए।

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

P.T.O.

2. श्रीनिवास दास अथवा श्रीलाल शुक्ल के साहित्यिक योगदान पर प्रकाश डालिए। (15)

3. 'कर्मभूमि' उपन्यास के कथानक पर प्रकाश डालिए। (15)

अथवा

"जीवन के संघर्षों ने उसके भीतर सेवा और त्याग की भावना जगा दी"- इस कथन के आलोक में सुखदा का चरित्र-चित्रण कीजिए।

4. 'रागदरबारी' उपन्यास के आधार पर ग्रामीण जीवन की समस्याओं का विश्लेषण कीजिए। (15)

अथवा

'रागदरबारी' उपन्यास के आधार पर पंचायत तथा राजनीति के क्षेत्र में भ्रष्टाचार की भूमिका स्पष्ट कीजिए।

5. निम्नलिखित में से किसी एक की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। (12)

(क) उसने सिर झुकाकर कहा - 'औरत की जिन्दगी और है ही किसलिए बहनजी! वह अपने दिल से लाचार है, जिससे वफ़ा की उम्मीद करती है, वही दगा करता है। उसका क्या अख्तियार?

लेकिन बेवफाओं से मुहब्बत न हो, तो मुहब्बत में मजा ही क्या रहे। शिकवा–शिकायत, रोना–धोना, बेताबी और बेकरारी यही तो मुहब्बत के मजे हैं, फिर मैं तो वफा की उम्मीद भी नहीं करती थी। मैं उस वक्त भी इतना जानती थी कि यह आँधी दो–चार घड़ी की मेहमान हैय लेकिन मेरी तस्कीन के लिए तो इतना ही काफी था कि जिस आदमी की मैं दिल में सबसे ज्यादा इज्जत करने लगी थी, उसने मुझे इस लायक तो समझा। मैं इस कागज की नाव पर बैठकर भी सागर को पार कर दूँगी।

अथवा

(ख) तब वकीलों ने लंगड़ को समझाया। बोले कि नक़ल बाबू भी घर–गिरिस्तीदार आदमी हैं। लड़कियाँ ब्याहनी हैं। इसलिए रेट बढ़ा दिया है। मान जाओ और पाँच रुपये दे दो। पर वह भी ऐंठ गया। बोला कि अब यही होता है। तनख्वाह तो दारू- कलिया पर खर्च करते हैं और लड़कियाँ ब्याहने के लिए घूस लेते हैं। नक़ल बाबू बिगड़ गया। गुरकिर बोला कि जाओ, हम इसी बात पर घूस नहीं लेंगे। जो कुछ करना होगा, क़ायदे से करेंगे। वकीलों ने बहुत समझाया कि 'ऐसी बात न करो, लंगड़ भगत आदमी है, उसकी बात का बुरा न मानो,' पर उसका गुस्सा एक बार चढ़ा तो फिर नहीं उतरा।

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

6. निम्नलिखित में से **किन्हीं दो** पर टिप्पणी लिखिए : (9×2=18)

(क) उपन्यास के तत्व

(ख) उपन्यासकार जैनेंद्र

(ग) सकीना का चरित्र-चित्रण

(घ) रागदरबारी उपन्यास की प्रासंगिकता

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 1039 **L**

Unique Paper Code : 2052103601

Name of the Paper : Hindi Bhasha: Swaroop, Sanrachna Evam Itihas

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi**

Semester : VI – DSC

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

3. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं का परिचय देते हुए हिन्दी के उद्भव तथा विकास की यात्रा सविस्तार लिखें। (15)

अथवा

भारोपीय भाषा परिवार का सविस्तार परिचय दीजिए।

2. भाषा और बोली को परिभाषित करते हुए दोनों के बीच का अन्तर स्पष्ट करें। (15)

अथवा

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

P.T.O.

हिन्दी की विभिन्न बोलियों का परिचय देते हुए पश्चिमी हिन्दी तथा पूर्वी हिन्दी का सविस्तार वर्णन करें।

3. सम्पर्क भाषा के रुप में हिन्दी भारत के विभिन्न लोगों के बीच संवाद का मुख्य माध्यम है? इस कथन के आलोक में सम्पर्क भाषा के रुप में हिन्दी का महत्व स्पष्ट करें। (15)

अथवा

राजभाषा और राष्ट्रभाषा में क्या अंतर है? राजभाषा के रूप में हिंदी के संवैधानिक प्रावधानों का उल्लेख करें।

4. प्रिंट माध्यम के समाचारों में प्रयुक्त होने वाली हिन्दी का स्वरूप तथा विशेषताएं स्पष्ट करें। (15)

अथवा

सिनेमा में प्रयुक्त हिंदी भाषा की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

5. किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए : (10×3=30)

(i) मध्यकालीन आर्य भाषा

(ii) पहाड़ी हिन्दी

(iii) ज्ञान-विज्ञान की हिन्दी

(iv) इलेक्ट्रोनिक माध्यम की भाषा

(v) सिनेमा की भाषा

(3500)

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No.............

Sr. No. of Question Paper : 6929 **L**

Unique Paper Code : 2053100025

Name of the Paper : आषाढ़ का एक दिन

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi – DSE**

Semester : VIII

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित संवादों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए **(कोई तीन)**

(12×3=36)

(क) तुम जिसे भावना कहती हो वह केवल छलना और आत्म-प्रवंचना है।...भावना में भावना का वरण किया है!...मैं पूछती हूँ भावना में भावना का वरण क्या होता है? उससे जीवन की आवश्यकताएँ किस तरह पूरी होती हैं?... भावना में भावना का वरण! हूं!

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

P.T.O.

(ख) राज्य उन्हें सम्मान दे रहा है, माँ! उन्हें राजकवि का आसान प्राप्त होगा...उस व्यक्ति को, जिसे उसके निकट के लोगों ने आज तक समझने का प्रयत्न नहीं किया। जिसे घर में और घर से बाहर केवल लांछना और प्रताड़ना ही मिली है।...अब तो विश्वास करती हो माँ, कि मेरी भावना निराधार नहीं है।

(ग) ये कोरे पृष्ठ मैंने अपने हाथों से बनाकर सिये हैं। इन पर तुम जब जो भी लिखोगे, उसमें मुझे अनुभव होगा कि मैं भी कही हूँ, मेरा भी कुछ है। परंतु आज तुम आये हो, तो सारा वातावरण ही और है। और...और नहीं सोच पा रही कि तुम भी वही हो या...?

(घ) अधिकार मिला, सम्मान बहुत मिला, जो कुछ मैंने लिखा उसकी प्रतिलिपियाँ देश-भर में पहुँच गयीं, परंतु मैं सुखी नहीं हुआ। किसी और के लिए वह वातावरण और जीवन स्वाभाविक हो सकता था, मेरे लिए नहीं था। एक राज्याधिकारी का कार्यक्षेत्र मेरे कार्यक्षेत्र से भिन्न था। मुझे बार-बार अनुभव होता कि मैंने प्रभुता और सुविधा के मोह में पड़कर उस क्षेत्र में अनधिकार प्रवेश किया है, और जिस विशाल में मुझे रहना चाहिए था उससे दूर हट आया हूँ।

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

2. 'मोहन राकेश के नाटकों ने हिंदी नाट्य साहित्य को नई दिशा दी'--इस कथन के परिप्रेक्ष्य में उनके नाट्य साहित्य का परिचय दीजिए। (18)

अथवा

मोहन राकेश के नाटक और रंगमंच संबंधी दृष्टिकोण का विवेचन कीजिए।

3. 'आषाढ़ का एक दिन' नाटक के कथ्य का विकास दवंदवों पर आधारित हैश–इस कथन की तार्किक समीक्षा कीजिए। (18)

अथवा

'आषाढ़ का एक दिन' नाटक के पुरुष पात्रों की चरित्र योजना की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

4. 'आषाढ़ का एक दिन' नाटक की भाषा रंगभाषा है, अपने उत्तर की तर्क सहित पुष्टि कीजिए। (18)

अथवा

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 7603 **L**

Unique Paper Code : 2053100022

Name of the Paper : Rashmirathi

Name of the Course : **B.A. Hons. Hindi – DSE**

Semester : VIII

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : **(कोई तीन)**

(12×3=36)

(क) "मैं कहता हूँ, अगर विधाता नर को मुट्ठी में भरकर,

कहीं छींट दे ब्रह्मलोक से ही नीचे भूमण्डल पर,

तो भी विविध जातियों में ही मनुज यहाँ आ सकता है,

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

P.T.O.

नीचे हैं क्यारियाँ बनीं, तो बीज कहाँ जा सकता है।

"कौन जन्म लेता किस कुल में? आकस्मिक ही है यह बात,

छोटे कुल पर, किन्तु, यहाँ होते तब भी कितने आघात!

हाय, जाति छोटी है, तो फिर सभी हमारे गुण छोटे,

जाति बड़ी, तो बड़े बनें वे, रहें लाख चाहे खोटे?"

(ख) "सिर पर कुलीनता का टीका

भीतर जीवन का रस फीका,

अपना नाम जो ले सकते,

परिचय न तेज से दे सकते,

ऐसे भी कुछ नर होते हैं

कुल को खाते औ' खोते हैं

विक्रमी पुरुष लेकिन, सिर पर

चलता न छत्र पुरखों का धर,

अपना बल-तेज जगाता है,

सम्मान जगत् से पाता है।

सब उसे देख ललचाते हैं,

कर विविध यत्न अपनाते हैं।

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

(ग) "कुरुकुल की रानी नहीं, कुमारी नारी- -
वह दीन, हीन, असहाय, ग्लानि की मारी !
सिर उठा आज प्राणों में झाँक रही है
तुझ पर ममता के चुम्बन आँक रही है।
"इस आत्म-दाह पीड़िता विषण्ण कली को,
मुझमें भुज खोले हुए दग्ध रमणी को,
छाती से सुत को लगा तनिक रोने दे,
जीवन में पहली बार धन्य होने दे।"

(घ) राधेय संगर से चला, मन में कहीं खोया हुआ,
जय-घोष की झंकार से आगे कहीं सोया हुआ
हारी हुई पाण्डव-चमू में हँस रहे भगवान् थे,
पर जीत कर भी कर्ण के हरे हुए-से प्राण थे
क्या सत्य ही, जय के लिए केवल नहीं बल चाहिए
कुछ बुद्धि का भी घातय कुछ छल-छद्म-कौशल चाहिए?

2. रामधारी सिंह दिनकर की काव्य-यात्रा पर प्रकाश डालिए। (18)

अथवा

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

'दिनकर की 'रश्मिरथी' एक सांस्कृतिक दस्तावेज है' – कथन की समीक्षा कीजिए।

3. खंडकाव्य की विशेषताएँ बताते हुए 'रश्मिरथी' की समीक्षा कीजिए। (18)

अथवा

'रश्मिरथी' की प्रतीक योजना एवं बिम्ब विधान को स्पष्ट कीजिए।

4. 'रश्मिरथी का नायक कर्ण दलित चेतना का प्रतिनिधि है' – कथन की विवेचना कीजिए। (18)

अथवा

'रश्मिरथी' की मूल संवेदना पर अपने विचार प्रकट कीजिए।

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : **1121** **L**

Unique Paper Code : 2052101201

Name of the Paper : हिंदी कविता: सगुण भक्ति एवं रीतिकालीन काव्य

Name of the Course : बी.ए. हिंदी विशेष – DSC

Semester : II

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्न पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (10×3=30)

(क) नाथ दैव कर कवन भरोसा। सोषिअ सिन्धु करिअ मंन रोसा।।
कादर मन कहूं एक अधारा। दैव दैव आलसी पुकारा।।
सुनत बिहसी बोले रघुबीरा। ऐसेहिं कब धरहु मन धीरा।।
अस कहि प्रभु अनुजहि समुझाई। सिन्धु समीप गए रघुराई।।
प्रथम प्रनाम कीन्ह सिरु नाई। बैठे पुनि तट दर्भ डसाई।।
जबहिं बिभीषन प्रभु पहिं आए। पाछें रावन दूत पठाए।।

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

P.T.O.

अथवा

तड़ाग नीरहीन ते सनीर होत केशोदास, पुंडरीक झुंड भौंर मंडक्लीन मंडही।

तमाल वल्लरी समेत सूखि सूखि कै रहे, ते बाग फूलि फूलि कै समूल सूल खंड ही।।

चितै चकोरिनी चकोर मोर मोरती समेत, हंस हंसिनी सुकादि सारिका सबै पढ़े।

जहीं जहीं बिराम लेत राम जू तहीं नहीं, अनेक भांति के अनेक भोग भाग सो बढ़े।।

(ख) आयो घोष बड़ो व्योपारी।

लादि खेप गुन ज्ञान-जोग की ब्रज में आन उतारी।।

फाटक दैकर हाटक माँगत भोरै निपट सुधारी।

धुर ही तें खोटो खायो है लये फिरत सिर भारी।।

इनके कहे कौन डहकावै ऐसी कौन अजानी।

अपनो दूध छाँडि को पीवै खार कूप को पानी।।

ऊधो जाहु सबार यहाँ तें बेगि गहरु जनि लावौ।

मुँह माँग्यो पैहो सूरज प्रभु साहुहि आनि दिखावौ।।

अथवा

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

मेरी भव-बाधा हरौ, राधा नागरि सोइ।
जा तन की झाँई परै, स्यामु हरित-दुति होइ।।
जब-जब वै सुधि कीजिये, तब-तब सब सुधि जाँहि।
आँखिनु आँखि लगी रहैं, आँखें लागति नाहि।।

(ग) रूपनिधान सुजान सखी जब तैं इन नैननि लेकु निहारे।
दीठि थकी अनुराग-छकी मति लाज के साज-समाज बिसारे।
एक अचंभौ भयो घनआनँद हैं मित ही पल-पाट उघारे।
टारैं टरैं नहीं तारे कहूँ सु लगे मनमोहन-मोह के तारे।।

अथवा

साजि चतुरंग सैन अंग में उमंग धरि
सरजा सिवाजी जंग जीतन चलत है
भूषण भनत नाद बिहद नगारन के
नदी-नद मद गैबरन के रलत है
ऐल-फैल खैल-भैल खलक में गैल गैल
गजन की ठैल-पैल सैल उसलत है
तारा सो तरनि धूरि-धारा में लगत जिमि
थारा पर पारा पारावार यों हलत है

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

2. रामचरितमानस के सुन्दरकाण्ड की प्रासंगिकता स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

'केशव कठिन काव्य के प्रेत हैं' प्रकाश डालिए।

3. सूरदास का भ्रमरगीत सार ज्ञान पर प्रेम की विजय का सुंदर उदाहरण है स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

बिहारी की बहुज्ञता पर प्रकाश डालिए।

4. भूषण के काव्य में व्यक्त राष्ट्रीय चेतना से आप क्या समझते हैं। (15)

अथवा

'प्रेम का मार्ग अत्यंत सीधा है' इस कथन के आधार पर घनानंद के काव्य में व्यक्त प्रेम को व्याख्यायित करें।

5. टिप्पणी कीजिए (कोई दो) (2×9=18)

(क) सुन्दरकाण्ड का नामकरण

(ख) सूरदास के पदों का काव्य शिल्प

(ग) बिहारी के काव्य और गागर में सागर भरने की क्षमता

(घ) घनानंद के काव्य की भाषा-शैली

(ङ) भूषण के काव्य में वीर रस

(च) केशव का काव्य-शिल्प

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकाल
KALINDI COLLEGE LIBRARY

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 6536 **L**

Unique Paper Code : 2055201003

Name of the Paper : Hindi Bhasha Aur Sahitya (C)

Name of the Course : **B.A. (Prog.) Hindi**

Semester : II

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।

2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (3×8=24)

(क) सतगुर बपुरा क्या करै, जे सिपही माँहै चूक ।
भावै त्यूं प्रमोधी ले, ज्यूं बँसि बजाई फूक ।।
माया दीपक नर पतंग, भ्रमि भ्रमि इवै पड़न्त ।
कहै कबीर गुर ग्यान थैं, एक आध उबरंत ।।

अथवा

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

इंद्री सिथिल भई केसव बिनु, ज्यों देही बिनु सीस।
आसा लागि रहति तन स्वासां जीवहीं कोटि बरिस ।।
तुम तो सखा स्याम सुंदर के, सकल जोग के ईस।
सूर हमारै नंद - नंदन बिनु, और नहीं जगदीश ।।

(ख) मेरी भव-बाधा हरौ, राधा मागरि सोई।
जा तन की झाँई परै, स्यामु हरित - दुति होई ।।
कहत, नटत, रीझत, खिझत, मिलत, खिलत, लजियात।
भरे भौंन में करत हैं, नैननु हिं सब बात ।।

अथवा

रावरे रूप की रीति अनूप, नयो नयो लागत ज्यौं ज्यौं निहारियै।
त्यौं इन आँखिन बानि अनोखी, अघानी कहूँ नहिं आनि तिहारियै ।।
एक ही जीव हुतौ सु तौ वार्यौ सुजान, सकोच और सोच सहारियै।
रोकी रहै न दहै, घनानन्द बावरी रीझ के हाथनि हारियै ।।

(ग) देखा आँगन के कोने मे कई नवागत
छोटी छोटी छाता ताने खड़े हुए है।
छाता कहूँ कि विजय पताकाएँ जीवन की,
या हथेलियाँ खोले थे वे नन्ही, प्यारी

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

जो भी हो, वे हरे हरे उल्लास से भरे
पंख मारकर उड़ने को उत्सुक लगते थे
डिंब तोड़कर निकले चिड़ियों के बच्चे से।

अथवा

नदी बनने की प्रतीक्षा में, कहीं नीचे
शुष्क नाले में नाचता एक अंजुरी जल,
संभी, बन रहा है कहीं जो बिश्वास
जो संकल्प हममें
बस उसी के सहारे हैं।
लीक पर वें चलें जिनके
चरण दुर्बल और हारे हैं।

2. हिंदी भाषा और साहित्य की इतिहास परंपरा को लिखिए। (12)

अथवा

"भक्तिकाल" हिंदी साहित्य का स्वर्णयुग है? विवेचना कीजिए।

3. कबीर, सामाज सुधारक के कवि थे? उदाहरण सहित लिखिए। (12)

अथवा

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तका
KALINDI COLLEGE LIBRAR

सूरदास, कृष्ण काव्य धारा के प्रमुख कवि हैं? अपने विचार लिखिए।

4. बिहारी की कविता में "शृंगार एव नीति" का समन्वय है? उदाहरण सहित लिखिए। (12)

अथवा

घनानन्द की कविता में अटूट प्रेम की अभिव्यक्ति है? विश्लेषण कीजिए।

5. सुमित्रानंदन पंत की साहित्यिक विशेषताएँ लिखिए। (12)

अथवा

"लीक पर वे चलें" कविता के माध्यम से जीवन के निहितार्थ को स्पष्ट कीजिए।

6. किन्हीं **तीन** पर टिप्पणी लिखिए : (3×6=18)

(क) ब्रज या अवधी बोली की विशेषताएँ

(ख) भक्तिकालीन साहित्य

(ग) प्रगतिशील कविता

(घ) रीति-बद्ध काव्य धारा

(1500)

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

[This question paper contains 8 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 1069 **L**

Unique Paper Code : 2052103602

Name of the Paper : अस्मितामूलक हिंदी साहित्य (दलित विमरश, स्त्री विमर्श एवं आदिवासी विमर्श)

Name of the Course : **DSC Hindi**

Semester : VI

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. स्त्री विमर्श की परिभाषा बताते हुए साहित्य में इसकी भूमिका पर प्रकाश डालिए। (15)

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

P.T.O.

अथवा

आदिवासी विमर्श की अवधारणा को बताते हुए उसके स्वरूप को स्पष्ट करें।

2. 'यही सच है' के माध्यम से स्त्री की मूल संवेदना को दर्शाइए। (15)

अथवा

'पच्चीस चौंका डेढ़ सौ' कहानी समाज में व्याप्त जातिवादी व्यवस्था की पोल खोलता है। विवेचन कीजिए।

3. 'सोनवा का पिंजरा' कविता के माध्यम से वंचित वर्ग के जीवन को दर्शाया गया है। उल्लेख कीजिए। (15)

अथवा

'कहाँ हो तुम माया' कविता में निहित स्त्री शोषण को दर्शाइए।

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकाल
KALINDI COLLEGE LIBRARY

4. 'स्त्री के अर्थ स्वातंर्त्र्य का प्रश्न' की मूल संवेदना बताइए। (15)

अथवा

'जंगल से आगे' के माध्यम से चित्रित आदिवासी जीवन संघर्ष का विवेचन कीजिए।

5. निम्नलिखित अंशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए - (8×3)

(क) "मास्टर शिवनारायण हत्थे से उखड़ गया। खींचकर एक थप्पड़ उसके गाल पर रसीद किया। आँखें तरेरकर चीखा, ह्अबे तेरा बाप इतना बड़ा विद्वान है तो यहाँ क्या अपनी माँ...(एक क्रिया - जिन्हें सुसंस्कृत लोग साहित्य में त्याज्य मानते हैं)... आया है साले; तुम लोगों को चाहे कितना भी लिखवाओ, पढ़ाओ... रहोगे वही - के - वही.. दिमाग में कूड़ा - करकट जो भरा है। पढ़ाई - लिखाई के संस्कार तो तुम लोगों में आ ही नहीं सकते। चल बोल ठीक से... पच्चीस चौका सौ... स्कूल में तेरी थोड़ी - सी तारीफ क्या होने लगी पाँव जमीन पर नहीं पड़ते। ऊपर से जबान चलावे है। उलटकर जवाब देता है।"

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

अथवा

"मुझे मालूम है ये गीत और नाच झालों को क्यों अच्छा न लगा।" झालो सोचती है इस भूख-पीड़ित धरती में नाच-गान क्यों? पहले भूख दूर हो। झालो ठीक कहती हैं। आज खाना मिला, कल मिलेगा... परसों... नरसों... एक महीना... दो महीना... फिर? और हमारे जानवरों के लिए भी चारा-पानी का इंतजाम द्य सरकार ने लाल कार्ड का इंतजाम किया है जिससे मुफ्त अनाज मिल रहा है। हफ्तावारी खर्च भी दिया है जो लाचार हैं उनको। जो काम करने लायक हैं उनको मेहनत-मजदूरी भेंट करा कर पैसे दे रही हैं-बाँध, पोखर, आहर, रोड सबका काम हो रहा है... और क्या चाहिए। नयी सरकार जीए।"

जेरकू ने कहा-"सब ठीक रहेगा नकक्। खाना मिलता रहेगा, अनाज बँट ही रहे हैं और तब तक तो दूसरी फसल हो ही जायेगी। का झालो "अब हँस दे।"

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

(ख) मारे थानेदरवा बोलाइ, घरवा से हमें,

झूठइ बनावें गुनहगार।

जेलवा में मलवा उठवै मजबूर करैं,

केउ नहिं सुनत गोहार।।

देशवाँ आजाद अहै हम तो गुलमवाँ,

हमरे लिये न सरकार।

एस कौनउ जुगुति लगावा भइया 'मितई',

हमरउ करावा उरधार।।

अथवा

झारखण्ड की धरती संताला

परगाना की माटी

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

P.T.O.

तुमका के पहाड़

और काठी कुंड के उजड़ते

जंगल पुकार रहे हैं तुम्हें

तुम जहाँ भी हो लौट आओ माया!

लौट आओ!!

(ग) "भारतीय स्त्री की स्थिति में आदिम–युग की स्त्री की परवशता और पूर्ण विकसित समाज के नारीत्व की गरिमा का विचित्र सम्मिश्रण है। उसके प्रति समाज की श्रद्धा की मात्रा पर विचार कर कोई उसे पूर्ण संस्कृत समाज का अंग ही समझ सकता है, परन्तु उसके जीवन का व्यवहारिक रूप एक दूसरी ही करुण गाथा सुनाता है। सम्भवत: उस धर्मप्रधान युग ने स्त्री को धार्मिक तथा सामाजिक दृष्टि से उन्नत स्थान देकर ही अपने कर्तव्य की इति समझ लीय उसकी व्यावहारिक कठिनाइयों की ओर उसका ध्यान हो नहीं जा सका।

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

अथवा

"4 मार्च को अंग्रेजी की परीक्षा होने वाली थी। चिन्तामणि सिंह ने परीक्षा के एक दिन पूर्व शाम को मुझे अंपने निवास पर बुलाया था, ताकि मैं परीक्षा की तैयारी करा सकूँ। मैं निर्धारित समय पर उनके निवास पर गया तो देखा कि पहले से ही तेजबहादुर तथा मोहम्मद हनीफ वहाँ मौजूद थे। किन्तु सबसे चौंकाने वाली उपस्थिति थी हीरालाल की, जो मुझे बात की बात में गालियाँ दे पड़ते थे। मुझे देखते ही हीरालाल ने कहा, 'का रे चमरा तं येहों आ गयले।' इस पर मैंने उनसे कहा कि आप मुझसे इस तरह क्यों बात करते हैं? मेरा इतना कहना था कि हीरालात मेरे ऊपर शेर की तरह झपट पड़े और जब तक चिन्तामणि सिंह उन्हें पकड़े, वे तब तक मुझे चार चाँटे लगा चुके थे। ये वही हीराल्लाल थे, जो मुझे बुलाने के लिए हमेशा 'चमरा-चमरा' शब्द का इस्तेमाल किया करते थे।

6. किसी एक पर टिप्पणी लिखिए - (6)

(क) "धरती लहलहायेगी, झालो, नाचेगी-गायेगी" में अस्मिता बोध।

(ख) दलित साहित्य पर अंबेडकर का प्रभाव।

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 1095 L

Unique Paper Code : 2052103603

Name of the Paper : Kathetar Gadya Sahitya

Name of the Course : DSC

Semester : VI

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. कथेतर गद्य साहित्य की विशेषताएँ लिंखते हुए उसकी प्रासंगिकता पर विचार कीजिए।

अथवा

कथेतर गद्य साहित्य और कथा साहित्य में अतर स्पष्ट कीजिए। (15)

2. कथेतर गद्य साहित्य के उद्भव और विकास का वर्णन कीजिए।

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

P.T.O.

अथवा

रिपोर्ताज विधा की विशेषताएँ बताते हुए उसकी उपयोगिता पर प्रकाश डालिए। (15)

3. 'आवारा मसीहा' शीर्षक की सार्थकता पर विचार करते हुए शरतचन्द्र के व्यक्तित्त्व का उल्लेख कीजिए।

अथवा

अजेय के रेखाचित्र राष्ट्र कवि: मैथिलीशरण गुप्त' के आधार पर गुप्तजी की विशेषताओं को लिंखिए। (15)

4. निराला के पत्र साहित्य में अभिव्यक्त सामाजिक–साहित्यिक परिवेश का परिचय दीजिए।

अथवा

'अकेला मेला' में अभिव्यक्त साहित्यिक विचारों का वर्णन कीजिए। (15)

5. निम्न गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए– (2×8=16)

(क) ऐसे ही एक उक्ति अहेर में मेरे हाथ ऐसी पूंछ आ गई जिसकी वास्तविक जानकारी मेरे ज्ञान जगत की सीमा में नहीं थी अवश्य ही यह समस्या पंडित जी की दृष्टि बचाकर ऐसी समस्याओं के बाड़े में प्रवेश पा गई जो मेरे लिए ही सुरक्षित थी, क्योंकि

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्त...
KALINDI COLLEGE LIBRARY

साधारणतरू पण्डित जी अनुभव की सीमा का ध्यान रखते थे। बचपन में जिज्ञासा इतनी तीव्र होती है बिना कार्य कारण स्पष्ट किए एक पग बढ़ाना भी कठिन हो जाता है। बादल पानी बिना बरसाए हुए रह सकते हैं परंतु पानी तो उनके बिना बरस नहीं सकता।

अथवा

"नीलांबर परिधान हरित पट पर सुंदर है" आदि से हिन्दी काव्य से और देशभूमि से परिचय हुआ; फिर जयद्रथ-वध अथवा पंचवटी के माध्यम से भारतीय वाङमय और परंपरा के आकर-पग्रन्थों से परिचय पाया। इतना सब तो पुस्तकें पढ़ने के अभ्यास से पहले ही हो गया था क्योंकि एक तो मेरे शिक्षा-दीक्षा भी पुराने ढंग से आरंभ हुई थी जिसमें पटिया और लेखनी का काम तो होता था लेकिन पुस्तकों का विशेषा प्रयोजन नहीं होता था-पुस्तक का काम स्मृति ही देती थी।

(ख) वे हृदय जीतने में विश्वास रखते थे। यह नहीं देखना चाहते थे की जीतने वाला हीं हीन जातीय है या विजातीय, विधर्मी-विदेशी है या कुमार्गी-कुचाली। जो हृदय जीतने का महान कार्य कर सकता है वह कुमार्गी-कुचाली हो ही नहीं सकता, और यह भी कि जो वास्तविक जीवन को देखना चाहता है वह शुचिता-अशुचिता के चक्कर में नहीं पड़ता। इसी अभिज्ञता के कारण गोर्की, ताल्स्ताय और शैक्सपियर शुचिता के चक्कर में नहीं पड़े।

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

अथवा

ज़रा अपने पहाड़ से उतर के नीचे तो देखो। उतरो उनके बीच अपने आँख-कान खोल के और उनकी तरह बोल के देखो, क्या होता है! बात तुम बेशक अपनी ही करो। पर ऐसी जुबान में तो करो जो उनकी सबकी अपनी जुबान हो, उनकी सबकी समझ में आए। कालीदास ही बनना है तो वह भी बनो। मगर कभी तुलसीदास बन के भी दिखाओ। बारी-बारी से दोनों ड्यूटी निभाओ। क्या ये भी तुम्हारी ड्यूटी नहीं है?

6. किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए : (2×7=14)

(क) रेखाचित्र विधा की विशेषताएँ

(ख) डायरी साहित्य: उद्भव और विकास

(ग) 'बिदापत नाच' का प्रतिपाद्य

(घ) पत्र-साहित्य

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 1435 **L**

Unique Paper Code : 2053100014

Name of the Paper : Shodh Providhi (DSE)

Name of the Course : **Hindi**

Semester : VI

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।

2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. शोध का स्वरुप स्पष्ट करते हुए उसकी प्रक्रिया पर प्रकाश डालिए।

अथवा

शोध प्रविधि का स्वरूप स्पष्ट कीजिए। (15)

2. समाजशास्त्रीय और तुलनात्मक शोध पद्धतियों का सविस्तार विश्लेषण कीजिए।

अथवा

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

P.T.O.

मनोवैज्ञानिक एवं भाषा-वैज्ञानिक शोध पद्धतियों की विशेषताएं लिखिए। (15)

3. शोध प्रक्रिया के विविध चरणों में रुपरेखा निर्माण का महत्व प्रतिपादित कीजिए।

अथवा

शोध प्रबंध लेखन के विविध चरणों का उल्लेख कीजिए। (15)

4. एक अच्छे शोधार्थी में कौन-कौन से गुण अपेक्षित हैं? स्पष्ट कीजिए।

अथवा

शोध कार्य में आने वाली विविध समस्याओं पर प्रकाश डालिए। (15)

5. निम्नलिखित में से **किन्हीं तीन** पर टिप्पणी लिखिए :

(i) शोध का क्षेत्र

(ii) पाठालोचन

(iii) तथ्य विश्लेषण

(iv) शोध के उपकरण

(v) संदर्भ सूची निर्माण (10×3=30)

(4000)

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

[This Question Paper contains 2 printed pages]
यह प्रश्न पत्र 2 मुद्रित पृष्ठों का है।

Your Roll Number.....................................
आपका अनुक्रमांक.....................................

Sr. No. of Question Paper : 15222

L

Name of the Course	:	ITEP
Unique Paper Code	:	2052103603
Name of the Paper	:	Kathetar Gadya Sahitya
Semester	:	VI, 2025-2026

Duration: 3 Hours
समयावधि: 3 घंटे

Maximum Marks: 90
पूर्णांक: 90

Important Instructions/ महत्वपूर्ण निर्देश:

इस प्रश्न पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. कथेतर गद्य साहित्य का परिचय देते हुए उसके स्वरूप पर विचार कीजिए. 15

अथवा

कथेतर गद्य साहित्य की विकास यात्रा समझाते हुए कथा साहित्य के साथ उसके अंत:संबंध को स्पष्ट कीजिए.

2. कथेतर गद्य साहित्य की प्रमुख विधाओं का परिचय दीजिए. 15

अथवा

रिपोतार्ज और पत्र साहित्य के अंतर को स्पष्ट करते हुए रिपोतार्ज विधा की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए.

3. महादेवी वर्मा रचित 'दद्दा' संस्मरण के आधार पर मैथिलीशरण गुप्त की साहित्यिक विशेषताओं को लिखिए. 15

अथवा

अज्ञेय रचित 'भारत कोकिला' रेखाचित्र के आधार पर सरोजिनी नायडू की चारित्रिक विशेषताओं को रेखांकित कीजिए.

4. डायरी विधा के आधार पर रमेशचंद्र शाह की डायरी रचना 'अकेला मेला' की समीक्षा कीजिए. 15

अथवा

फणीश्वरनाथ रेणु के रिपोतार्ज 'बिदापत नाच' की मुख्य सांस्कृतिक विशेषताओं को रेखांकित कीजिए.

P.T.O.

5. निम्न गद्याशों की सप्रसंग समीक्षा कीजिए : 2x8=16

(क) "साइमन कमीशन का बहिष्कार करने का निश्चय हुआ था, लेकिन कुछ लोग कमीशन के सामने बयान देने गये थे। लाहौर में पंजाब विश्वविद्यालय के सेनेट हाल में कमीशन की बैठक हो रही थी। विश्वविद्यालय के कुछ व्यक्तियों को गैलरी में बैठने की अनुमति मिली थी; इन में लीलामणि भी थीं। गवाहों के बयान पर वह लगातार व्यंग्य-भरी टिप्पणियाँ करती जाती थीं जिस में हम सब रस ले रहे थे। साइमन साहब का चेहरा क्रोध से तमतमा रहा था। वह बार-बार नजर उठा कर गैलरी की ओर घूरते और फिर इस लिए सब्र कर लेते कि बाधा देने वाली एक स्त्री है। इस से लोगों को और मजा आता; इधर लीलामणि की छींटाकशी भी और तीखी होती जाती ।

अन्त में जब साइमन साहब से नहीं रहा गया तब उन्होंने गैलरी में लीलामणि की ओर देखते हुए पूछा, "क्या यही शिक्षित भारतीय नारी का नमूना है?"

नीचे कुछ लोग होंठ दबा कर मुस्करा दिये। लेकिन गैलरी से कड़कती हुई आवाज आयी : "जी नहीं, मैं ऑक्सफ़ोर्ड की फ़र्स्ट क्लास ग्रेजुएट हूँ !"

अथवा

इसी प्रक्रिया का भाषागत पर्याय भी अवश्य है, और उस के प्रति जागरूक रहना भाषा के प्रयोक्ता का कर्तव्य है। केवल पंडित या अध्यापक या वैयाकरण की जागरूकता प्रक्रिया को पहचानने और अंकित करने तक भी सीमित रह सकती है, पर कृतिकार उस से आगे जाता है क्योंकि वह केवल पहचानने वाला नहीं है, उस का कार्य इस प्रक्रिया को निरन्तर ऐसी प्रणालियों में डालते चलना भी है जिन से भाषा प्राण-रस की वाहिका बनी रह सके ।

(ख) "तुम्हारे कवित्त-कहानी-लेख जो भी जहाँ भी दिख जाते हैं, पढ़ तो जाता हूँ। मगर तुम्हारी कुछ बातें समझ में नहीं आतीं। ऊपर-ऊपर से निकल जाती हैं। कभी कुछ हमारे जैसों के लिए भी लिखा करो। ...मैं उपदेश नहीं दे रहा हूँ-मेरी बातों का बुरा मत मानना। मन की बात कहनी ही पड़ेगी। अरे, आज के ज़माने में तो कालिदास को भी तुलसीदास बनना पड़ेगा। तुम समझे कि नहीं समझे ? कालिदास को पढ़ने वाले कितने होंगे ? अरे, निन्यानवे फीसदी लोग पढ़े-लिखों में भी मेरे जैसे ही होंगे। उनसे कौन बात करेगा ? उनकी खबर कौन लेगा ? ज़रा अपने पहाड़ से उतर के नीचे तो देखो, अपने आसपास भी तो देखो। उतरो उनके बीच अपने आँख-कान खोल के और उनकी तरह बोल के देखो, क्या होता है! बात तुम बेशक अपनी ही करो, जितनी ऊँची चाहो, उतनी ऊँची करो। मगर ऐसी जुबान में तो करो जो उनकी सबकी जुबान हो, उनकी सबकी समझ में आए।

अथवा

दुखी-दीन, अभावग्रस्तों ने घड़ी-भर हँस-गाकर जी बहला लिया, अपनी जिंदगी पर भी दो-चार व्यंग्य-बाण चला दिए, जी हल्का हो गया। अर्धमृत वासनाएँ थोड़ी देर के लिए जगीं, अतृप्त जिंदगी के कुछ क्षण सुख से बीते। मेहनत की कमाई मुट्ठी-भर अन्न के साथ-साथ आज इन्हें थोड़ा-सा 'मोहक प्यार' भी मिलेगा, इसमें संदेह नहीं। आप खोज रहे हैं-आर्ट, टेकनीक और न जाने क्या-क्या, और मैं आपसे चलते-चलाते फिर भी अर्ज करता हूँ कि यह महज बिदापत-नाच था।

6. किन्हीं दो पर टिप्पणी लिखिए : 2x7=14

(1) रेखाचित्र विधा : उद्भव और विकास
(2) अज्ञेय की दृष्टि में 'एक भारतीय आत्मा : एक चुनौती'
(3) आवारा मसीहा के आधार पर शरतचंद्र की विशेषताएँ
(4) निराला के पत्र साहित्य की विशेषता

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No...............

Sr. No. of Question Paper : 103 **L**

Unique Paper Code : 2052204801

Name of the Paper : Hindi Nibandh (DSC)

Name of the Course : **B.A. (Prog.)**

Semester : VIII

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए ।

2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं ।

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (10×3=30)

(क) एक ही घटना या स्थिति से सभी मनुष्य समान रूप में प्रभावित नहीं होते। हर आदमी की मनोवृत्ति और इष्टिकोण अलग है। रचना कौशल इसी में है कि लेखक जिस मनोवृत्ति या दृष्टिकोण से किसी बात को देखे पाठक भी उसमें उससे सहमत हो जाए। यही उसकी सफलता है। इसके साथ ही हम साहित्यकार से भी आशा रखते हैं कि वह अपनी बहुज्ञता और अपने विचारों की विस्तृति से हमें जाग्रत करें, हमारी दृष्टि तथा मानसिक परिधि को विस्तृत करें-उसकी दृष्टि इतनी सूक्ष्म, इतनी गहरी और इतनी विस्तृत हो कि उसकी रचना से हमें आध्यात्मिक आनन्द और बल मिले।

P.T.O.

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

अथवा

प्रेम की भाषा शब्द-रहित है। नेत्रों की, कपोलों की, मस्तक की भाषा भी शब्द-रहित है। जीवन का तत्व भी शब्द से परे है। सच्चा आचरण-प्रभाव, शील, अचल-स्थित संयुक्त आचरण-न तो साहित्य के लम्बे व्याख्यानों से गठा जा सकता है; न वेद की श्रुतियों के मीठे उपदेश से; न अंजील से; न कुरान से; न धर्मचर्चा से; न कवेल सत्संग से। जीवन के अरण्य में धँसे हुए पुरुष के हृदय पर प्रकृति और मनुष्य के जीवन के मौन व्याख्यानों के यत्न से सुनार के छोटे हथौड़े की मन्द-मन्द चोटों की तरह आचरण का रूप प्रत्यक्ष होता है।

(ख) देवदारु भी सब एक से नहीं होते। मेरे बिल्कुल पास में जो है, वह जरठ भी है, खूंसट भी। जरा उसके नीचे की ओर जो है, वह सनकी-सा लगता है। एक मोटेराम खड्ड के एक प्रान्त पर उगे हैं, आधे जमीन में, आधे अधर में; आधा हिस्सा ठूंठ, आधा जगर-मगर, सारे कुनबे के पाधा जान पड़ते हैं, एक अल्हड़ किशोर है, सदा हँसता-साय कवि-जैसा लगता है। जी करता है इसे प्यार किया जाये। सदा से ऐसा होता आया है। हर देवदारु का अपना व्यक्तित्व होता है। एक इतना कमनीय था कि बैल की ध्वजावाले महादेव ने उसे अपना बेटा बना लिया था।

अथवा

अभिषेक की बात चली, मन में अभिषेक हो गया और मन में राम के साथ राम का मुकुट प्रतिष्ठित हो गया। मन में प्रतिष्ठित हुआ, इसलिए राम ने राजकीय वेश उतारा, राजकीय रथ से उतरे, राजकीय भोग का परिहार किया, पर मुकुट तो लोगों के मन में था, कौसल्या के मातृ-स्नेह में था, वह कैसे उतरता, वह

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकाल
KALINDI COLLEGE LIBRA..

मस्तक पर विराजमान रहा और राम भीगें तो भीगें मुकुट न भीगने पाये, इसकी चिंता बनी रही। राजा राम के साथ उनके अंगरक्षक लक्ष्मण का कमर-बंद दुपट्टा भी (प्रहरी की जागरूकता का उपलक्षण) न भीगने पाये और अखंड सौभाग्यवती सीता की मांग का सिंदूर न भीगने पाये, सीता भले ही भीग जायें।

(ग) इस देश की संस्कृति की धारा अति प्राचीन काल से बहती चली आई है। हम उसका सम्मान करते हैं, किंतु उसके प्राणवंत तत्व को अपनाकर ही हम आगे बढ़ सकते हैं। उसका जो जड़ भाग है, उस गुरुत्तर बोझ को यदि हम ढोना चाहें, तो हमारी जाति में अड़चन उत्पन्न होगी। निरंतर गति मानव जीवन का वरदान है। व्यक्ति हो या राष्ट्र, जो एक पड़ाव पर टिका रहता है। उसका जीवन ढलने लगता है।

इसलिए 'चरैवेति चरैवेति' की धुन जब तक राष्ट्र के रथ-चक्रों में गूँजती रहती है, तभी तक प्रगति और उन्नति होती है, अन्यथा प्रकाश और प्राणवायु के कपाट बंद हो जाते हैं और जीवन रुँध जाता है।

अथवा

वास्तव में यह अमृत्व की कामना को अमर बनाए रखने का संकल्प पर्व है। अमर होने की कामना यदि सदैव जीवन्त बनी रहे तो फिर देह की अमरता गौण हो जाती है और यह जीवन्त कामना मनुष्यता को सदैव अद्‌भुत जिजीविषा से भरकर उसकी यात्रा को आगे बढ़ाती रहती है। अमृत की बूंद के संगम पर, शिप्रा, गोदावरी और गंगा में अमृत घट से छलक कर टपक पड़ने की कुल व्यंजना यही है कि उस मनुष्यता को मरने मत दो जिससे यह कुम्भरूपी ब्रह्मांड निर्मित हुआ है।

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

2. निबंध की परिभाषा देते हुए हुए उसके स्वरूप पर प्रकाश डालिए। (15)

अथवा

द्विवेदीयुगीन निबंधों में पायी जाने वाली प्रमुख प्रवृत्तियों का सविस्तार वर्णन कीजिए।

3. 'साहित्य का उददेश्य' निबंध में साहित्य के कौन-कौन से उद्देश्य बताए गए हैं। वर्णन कीजिए। (15)

अथवा

'आचरण की सभ्यता' निबंध का सार अपने शब्दों में लिखिए।

4. 'देवदारू' वृक्ष के गुणों का वर्णन करते हुए उसके प्रतीकात्मक महत्व को स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

'मेरे राम का मुकुट भींग रहा है' निबंध की मूल संवेदना स्पष्ट कीजिए।

5. 'संस्कृति का स्वरूप' निबंध की तात्विक समीक्षा कीजिए। (15)

अथवा

'कुम्भ : मनुष्यता की अमर यात्रा का संकल्प पर्व' निबंध का कथ्य स्पष्ट कीजिए।

(300)

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No...............

Sr. No. of Question Paper : 1011 **L**

Unique Paper Code : 2052104801

Name of the Paper : हिंदी साहित्य में भारतबोध (DSC)

Name of the Course : **बी.ए. ऑनर्स (हिंदी)**

Semester : VIII

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्न में से किन्हीं **तीन** की व्याख्या कीजिये : (10×3=30)

(क) नयन उन्हें हैं निष्ठुर कहते,

पर इनसे जो आँसू बहते,

सदय हृदय वे कैसे सहते ?

गए तरस ही खाते !

P.T.O.

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

सखि, वे मुझसे कह कर जाते।
जायें, सिद्धि पावें वे सुख से,
दुखी न हों इस जन के दुख से,
उपालंभ दूँ मैं किस मुख से?-
आज अधिक वे भाते!
सखि, वे मुझसे कह कर जाते।

(ख) अरुण यह मधुमय देश हमारा।
जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा।।
सरल तामरस गर्भ विभा पर, नाच रही तरुशिखा मनोहर।
छिटका जीवन हरियाली पर, मंगल कुंकुम सारा।।
लघु सुरधनु से पंख पसारे, शीतल मलय समीर सहारे।
उड़ते खग जिस ओर मुँह किए, समझ नीड़ निज प्यारा।।

(ग) लाखों एकड़ जमीन को अचानक लकवा मार गया होगा। एक विशाल भू-भाग, हठात् कुछ से कुछ हो गया होगा। सफेद बालू से कूप, तालाब, नदी-नाले पट गये। मिटती हुई हरियाली पर हल्का बादामी रंग धीरे-धीरे छा गया। कच्छप्पपृष्ठसदृश भूमि। कछुआ पीठा जमीन? तंध साधकों से पूछिए, ऐसी धरती के बारे में वे कहेंगे असल स्थान वही है जहाँ बैठकर सब कुछ

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

साधा जा सकता है। कथा है। कथा होगी अवश्य इस परती की भी। व्यथा भरी कथा वन्ध्या धरती की। इस पाँतर की छोटी-मोटी, दुबलीं-पतली नदियाँ आज भी चार महीने तक भरे गले से, कलकल सुर में गाकर सुना जाती हैं, जिसे हम नहीं समझ पाते। कथा की एक कड़ी, कार्तिक से माघ तक प्रतिरात्रि के पिछले पहर में, सुनाई पड़ती है आज भी!

(घ) मैंने एक सिगरेट की डिबिया खरीदी और एक सुनसान जगह पर बैठकर सिगरेट पीते हुए पूर्व समय की याद करने लगा कि अचानक मुझे धर्मशाला का स्मरण हो आया जो मेरे विदेश जाते समय बन रही थी। मैं उस ओर लपका कि रात किसी प्रकार वहीं काट लूँ मगर शोक! शोक!! महान शोक!!! धर्मशाला ज्यों की त्यों खड़ी थी किन्तु उसमें गरीब याथियों के टिकने के लिए स्थान न था। मदिरा दुराचार, और द्यूत ने उसे अपना घर बना रखा था। यह दशा देखकर विवशतः मेरे हृदय से एक सर्द आह निकल पड़ी और मैं जोर से चिल्ला उठा कि नहीं नहीं नहीं और हजार बार नहीं है - ये मेरा प्यारा भारत नहीं है। यह कोई और देश है। यह योरोप है अमेरिका है मगर भारत कदापि नहीं है।

2. भारतबोध की संकल्पना क्या है? भारतीय साहित्य में यह किस प्रकार रूपायित हुई है? युक्तियुक्त उत्तर दीजिये। (15)

अथवा

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

भारतीय जीवन दृष्टि को व्याख्यायित करते हुए इसकी मुख्य विशेषताएँ लिखिए।

3. भारतीय साहित्य में भारतीयता की संकल्पना को स्पष्ट कीजिये।

(15)

अथवा

भारतीय भक्ति काव्य की पृष्ठभूमि तथा विकास का विस्तार पूर्वक विवेचन कीजिये।

4. रामचरितमानस के अयोध्याकाण्ड के 'राम-भरत संवाद' की मुख्य विशेषताएँ लिखिए।

अथवा

नागार्जुन की कविता 'कालिदास सच-सच बतलाना' की मूल संवेदना विस्तारपूर्वक लिखिए। (15)

5. पाठ्यक्रम में निर्धारित निबंध 'तुलसी के राम' का प्रतिपादय स्पष्ट कीजिये। (15)

अथवा

'भारत जननी' नाटक का मूल भाव लिखिए।

कालिन्दी महाविद्यालय पुस्तकालय
KALINDI COLLEGE LIBRARY

(1500)